

“पंच गौरव कार्यक्रम”

वर्ष—2025



डॉ. इन्द्रजीत यादव
जिला कलक्टर
बांसवाड़ा

सत्येन्द्र कुमार शाह
उप निदेशक
आर्थिक एवं सांख्यिकी बांसवाड़ा

उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग
बांसवाड़ा (राजस्थान)



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सुजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(भजन लाल शर्मा)

विषय—सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	जिला एक दृष्टि बांसवाडा	1–2
2	एक जिला एक वनस्पति प्रजातिः—सागवान	3–10
3	एक जिला—एक उपजः—आम	11–14
4	एक जिला—एक उत्पादः— मार्बल	15–18
5	एक जिला—एक खेलः— तिरंदाजी	19–22
6	एक जिला—एक पर्यटनः— त्रिपुरा सुन्दरी	23–26
7	जिला कार्यालय द्वारा बैठक एवं प्रस्ताव विवरण	27–30

जिला एक दृष्टि बांसवाडा



—: भौगोलिक संरचना :—

बांसवाडा जिला राजस्थान के दक्षिण में स्थित हैं। भौगोलिक दृष्टि से बांसवाडा जिला राजस्थान के दक्षिण में 23.11° उ.अ. से 23.56° उ.अ. तथा 73.58° पू.दे. से 74.49° पू.दे. के मध्य स्थित हैं। इसके उत्तर में प्रतापगढ़, पश्चिम में डूंगरपुर जिले तथा पूर्व में मध्य प्रदेश के रतलाम व झाबुआ जिले तथा दक्षिण में गुजरात के दाहोद एवं महिसागर जिले स्थित हैं। जनसंख्या की दृष्टि से यह राजस्थान में 28 वें स्थान पर हैं। वर्तमान

में जिले में 8 उपखण्ड, 12 तहसील, 13 ब्लॉक पंचायत समितियां तथा 417 ग्राम पंचायतें हैं। अरावली की उबड़—खाबड़ पहाड़ियों से धिरा यह प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हैं। जिले की मुख्य नदी माही एवं उसकी सहायक नदियां अनास, एराव, चाप आदि हैं। यहां की 76.38 % जनसंख्या आदिवासी भील आबादी हैं जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां बोली जाने वाली मुख्य बोली वागडी हैं जो गुजराती एवं मेवाड़ी बोलियों का मिश्रण है। प्रमुख पर्यटन स्थल माही बजाज सागर का बैकवाटर एरिया चाचाकोटा, माही बजाज सागर बांध, मानगढ़ धाम पहाड़ी पर स्थित शहीद स्मारक, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, अरथुना शिव मंदिर, छींच ब्रह्म मंदिर, घोटिया आंबा मंदिर आदि प्रसिद्ध हैं।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति:- सागवान

1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहाँ अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। राज्य के विभिन्न जिलों में अलग-अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद, खनिजों का खनन, एवं प्रसंस्करण, पर्यटन आदि प्रमुख गतिविधियाँ भी जिलों की प्रमुख पहचान हैं।



बांसवाड़ा में सागवान वृक्ष जिसे स्थानीय भाषा में (हागड़ा) के नाम से भी जाना जाता है। यह पेड़ एक सदाबहार पेड़ है जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इस लकड़ी का उपयोग सभी क्षेत्रों में कच्चे घर बनाने, फर्नीचर आदि में इमारती लकड़ी के लिए उपयोग किया जाता है।

राज्य के सर्वांगीण विकास को देखते हुए जिला बांसवाड़ा अन्तर्गत वन विभाग द्वारा जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर “एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति में सागवान की प्रजाति” का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य—

1. एक जिला एक वनस्पति प्रजाति अन्तर्गत जिले की आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए सागवान की प्रजाति का चयन किया गया है।
2. स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार एवं लघु उद्योग को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
3. जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
4. सागवान की प्रजाति का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।

अनुमत कार्य (केवल सूचक)



सागवान वृक्ष एक सदाबहार पेड़ है जो उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इस लकड़ी का उपयोग जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में कच्चे घर बनाने, फर्नीचर एवं लघु उद्योग आदि के लिए उपयोग किया जाता है।

सागवान की विशेषता



सागवान या टीकवुड द्विबीजपत्री पौधा है। यह चिरहरित यानि वर्ष भर हरा—भरा रहने वाला पौधा है। सागवान का वृक्ष प्रायः 80 से 100 फुट लम्बा होता है। इसका वृक्ष काष्ठीय होता है। इसकी लकड़ी हल्की, मजबूत और काफी समय तक चलनेवाली होती है। इसके पत्ते काफी बड़े होते हैं। फूल उभयलिंगी और सम्पूर्ण होते हैं। सागवान का वानस्पतिक नाम टेक्टोना ग्रैंडिस (Tectona Grandis) यह बहुमूल्य इमारती लकड़ी है।

सागवान की उपयोगिता

सागवान उत्कृष्ट कोटि के जहाजों, नावों, बोंगियों इत्यादि भवनों की खिड़कियों और चौखटों, रेल के डिब्बों और उत्कृष्ट कोटि के फर्नीचर के निर्माण में प्रधानतया प्रयुक्त होता है। जिला बांसवाड़ा में स्थानीय आदिवासी जिला होने से यहा मुख्यतया: मकान निर्माण में अधिक आवश्यक है साथ ही घरेलू खाना बनाने में प्रयुक्त सामग्री में भी सागवान से बनाई जाती है।

सागवान सुधार कार्य :— सागवान सुधार हेतु निम्नानुसार कार्य करवाया जा सकता है।

जिले में सागवान वन क्षेत्र का लगभग 23213.98 हैक्टेयर क्षेत्र है। जहां-जहां जिले में सागवान की अधिकता है। वहां-वहां पर क्लीनिंग एवं कर्षण कार्य करवाया जाकर सागवान वनस्पति में वृद्धि करने के प्रयास किये जाते हैं। प्रत्येक ठूंठ पर शुरूआत में तीन स्वरथ, समान अन्तराल पर कोपिस तने



रखे जाते हैं उसके बाद 5वें वर्ष में 2 तथा 10वें वर्ष में एक कोपिस तना रखा जाता है।



कृत्रिम पुनरोत्पादन तथा सागवान की रूट शूट कटिंग का प्लान्टिंग कर तैयार की जाती है।



इच्छुक कृषक भी अपनी कृषक भूमि पर पर खेती के साथ-साथ 2 मीटर के दूरी पर पौधारोपण कर सागवान की खेती की जा सकती है। सागवान के बीज नर्सरी बेड में बोए जाते हैं।

स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान चलाना। वर्षा ऋतु के दौरान स्थानीय समुदाय, तथा वन सुरक्षा समिति द्वारा वृक्षारोपण किया जाता है तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण हेतु प्रचार-प्रसार किया जाता है।

वन विभाग

क्र. सं.	बिन्दु	कार्ययोजना	अनुमानित व्यय(राशि लाखों में)	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
1	<p>पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के अनुसार बांसवाड़ा जिले में सागवान प्रजाति का चयन किया गया है।</p>	<p>इस विभाग की विभागीय योजनाओं में विभिन्न प्रजाति के पौधे वितरण पौधारोपण हेतु तैयार किये जा रहे हैं।</p> <p>जिसमें TOFR योजनातार्गत 12 माह व 24 माह के कुल 14.50 लाख व विभागीय वृक्षारोपण हेतु 4. 12 लाख पौधे तैयार किये जा रहे हैं। जिनमें से लगभग 20 से 25 प्रतिशत तक पौधे सागवान के तैयार किये जा रहे हैं। जिनका उपयोग विभागीय पौधारोपण एवं पौध वितरण में उपयोग किया जायेगा</p>	<p>विभागीय योजनाओं में प्राप्त बजट से कार्य करवाया जाने के कारण बजट की आवश्यकता नहीं है।</p>	मार्च, 2026	उप वन संरक्षक बांसवाड़ा

क्र. सं.	बिन्दु	कार्ययोजना	अनुमानित व्यय(राशि लाखों में)	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
2	जन जागरूकता अभियान चलाना, जिसमे स्थानिय लोगों को वनस्पति के महत्व के बारे में बताया जाए। यह अभियान स्कुलों, कॉलेजों और पंचायती के माध्यम से किया जा सकता है।	जन जागरूकता अभियान चलाना जिसमे स्थानिय लोगों को वनस्पति सागवान के महत्व के बारे में जानकारी हेतु वन विभाग द्वारा जिला स्तरीय पंच गौरव (सागवान प्रजाति) जागरूकता अभियान (रली आयाजन, नुक़ड नाटक का बैनर फ्लेक्स आदि के माध्यम से) चलाया जायगा।	5.00	मई से जुलाई 2026 के मध्य	उप वन संरक्षक बांसवाडा
3	हाईटेक नर्सरी की स्थापना	केवल सागवान प्रजाति के पौधे की तैयारी हेतु वनमण्डल बौरावाहा की रेंज बाँसवाडा में हाईटेक नर्सरी की स्थापना ताकि सागवान के पौधे अधिकाधिक रूप से तैयार किये जाकर वितरण व वृक्षारोपण में	45.00	बजट प्राप्ति उपरान्त 12 माह में	उप वन संरक्षक बांसवाडा

क्र. स.	बिन्दु	कार्ययोजना	अनुमानित व्यय(राशि लाखों में)	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
		उपयोग किये जा सके।			
4	वृक्षारोपण कार्यक्रमः— प्रत्येक जिले में चुनिंदा वनस्पति की प्रजातियों का वृक्षारोपण किया जाए। सरकारी और गैर—सरकारी संस्थाओं के सहयोग से वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए जाए। सागवान वाटिका विकसित किया जा सकता है।	बांसवाड़ा जिले में चिन्हित वनस्पति की प्रजाति सागवान का अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने हेतु वन विभाग के स्तर से ही वन क्षेत्र में वृक्षारोपण स्थलों पर कुल लक्ष्य का 20 से 25 प्रतिशत तक सागवान के पौधों के रोपण का कार्य करवाया जायेगा। इसके अतिरिक्त 5 सागवान कुंज की स्थापना	10.00	बजट प्राप्ति उपरान्त 12 माह में	उप वन संरक्षक बांसवाड़ा
5	संरक्षण और देखभालः— इस योजना के अन्तर्गत वृक्षारोपण के बाद उन पौधों की देखभाल और संरक्षण की जिम्मेदारी भी की जाये ताकि वे बड़े	उक्त योजना के अन्तर्गत वन विभाग द्वारा ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति के माध्यम से करवाये गये वृक्षारोपण के पश्चात पौधों की देखभाल और	10.00	पौधारोपण उपरान्त 3 वर्षों तक	उप वन संरक्षक बांसवाड़ा

क्र. स.	बिन्दु	कार्ययोजना	अनुमानित व्यय(राशि लाखों में)	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
	होकर एक मजबूत परिस्थिति तंत्र का हिस्सा बन सके।	संरक्षण का कार्य आगामी 3 वर्ष तक कार्य करवाया जायेगा।			
6	साझेदारी और सहयोग:- इस योजना के सफल कार्यान्वयन के लिये स्थानिय वन विभाग पर्यावरण संगठन और नागरिक समाज संगठनों के साथ साझेदारी की आवश्यकता होगी।	वन विभाग की 6 रेंजों अन्तर्गत प्रत्येक रेंज स्तर पर पंच गौरव (सांगवान प्रजाति) जागरूकता अभियान (रैली आयोजन) नुक़ड नाटक बैनर फ्लेक्स आदि के माध्यम से प्रचार प्रसार।	5.00	मई जुलाई, 2027 तक से	उप वन संरक्षक बांसवाडा
योग			75.00		

एक जिला—एक उपजः—आम

01. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहाँ अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। बांसवाड़ा, जिसे “राजस्थान का चेरापुंजी” भी कहा जाता है, दक्षिण



राजस्थान में स्थित है। यह क्षेत्र प्रचुर मात्रा में बारिश प्राप्त करता है और इसकी मिट्टी आम की खेती के लिए अनुकूल मानी जाती है। यहाँ की जलवायु गर्मियों में गर्म और मानसून में नम रहती है, जो आम के पेड़ों की वृद्धि के लिए उपयुक्त होती है।

02. आम की खेती की प्रक्रिया

- भूमि चयन — आम की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी आदर्श मानी जाती है।
- रोपण का समय — आम के पौधे को मानसून के मौसम (जुलाई—अगस्त) में लगाया जाता है।
- सिंचाई और देखभाल — गर्मियों में प्रत्येक 10–15 दिन में सिंचाई आवश्यक होती है। मॉनसून में अतिरिक्त पानी की आवश्यकता नहीं होती।
- खाद और उर्वरक — जैविक खाद, गोबर खाद और नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश का संतुलित उपयोग किया जाता है।

3. बांसवाड़ा में आम की किस्में

बांसवाड़ा और उसके आसपास कई किस्मों के आम उगाए जाते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं:—

- केसर आम — यह मीठा और सुगंधित होता है।
- दशहरी आम — पतली गुठली और रसीले गूदे वाला।
- लंगड़ा आम — फाइबर रहित और बेहद मीठा।
- तोतापुरी — हल्का खट्टा—मीठा स्वाद, अचार बनाने के लिए उपयोगी।
- अल्फांसो—सबसे महंगा और प्रीमियम क्वालिटी का आम।



4. आम के उत्पादन और व्यापार

बांसवाड़ा जिले में आम का उत्पादन मुख्य रूप से घरेलू खपत और स्थानीय बाजारों में बिक्री के लिए किया जाता है। हाल के वर्षों में, कुछ किसानों ने ऑर्गेनिक आम की खेती शुरू की है, जिससे उन्हें ऊँचे दाम मिल रहे हैं।

5. आम से जुड़े उद्योग और उपयोग

- आम का अचार और जैम — स्थानीय स्तर पर तैयार किए जाते हैं।
- आम का पल्प — जूस और शेक के लिए निकाला जाता है।
- सूखे आम (अमचूर) — मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है।
- व्यापार और निर्यात — बांसवाड़ा में उगाए गए आम मुख्य रूप से गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान के अन्य शहरों में भेजे जाते हैं।

6. आम उत्पादन से किसानों को लाभ

- बढ़ती मांग के कारण किसानों को अच्छे दाम मिल रहे हैं।
- सरकार की विभिन्न योजनाओं और कृषि विभाग की सहायता से आम की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- बांसवाड़ा के कुछ किसान अब आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रिप इरिगेशन और बागवानी तकनीकों को अपनाकर उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

उद्यान विभाग

(आम फल बगीचा स्थापना 100 हैं कटर एंव संभावित लाभान्वित कृषक संख्या 500)

क्र. स.	विवरण	विवरण	प्रोजेक्ट से राशि	वि.वि.
1	आम फल बगीचा स्थापना	NHM दिशा—निर्देशानुसार गड्ढ खोदना—भरना, आदान उर्वरक आदि 0.20 है. क्षेत्रफल लागत रु. 5100 एवं विभागीय अनुदान रु. 3825 एवं प्रोजेक्ट से अनुदान रु. 1275 किया जाना प्रस्तावित है।	637500	अनुदान राशि का भुगतान कृषक के खाते मे अथवा कृषक की सहमति से कर्मदायी फर्म / वेंडर को हस्तान्तरित करने हेतु प्रावधान किया जाना प्रस्तावित है।
2	अन्तराशस्य के रूप में सब्जी उत्पादन मय ड्रिप संयंत्र PMKSY दिशा—निर्देशानुसार	प्रत्येक कृषक को 0.20 है. में फल बगीचे में अन्तराशस्य के रूप सब्जी प्रदर्शन मे ड्रिप स्थापना लागत रु. 31436 एवं विभागीय अनुदान रु. 23577 प्रोजेक्ट से अनुदान रु. 7860 प्रति कृषक किया जाना प्रस्तावित है।	3930000	
3	सब्जी प्रदर्शन	0.20 है, क्षेत्रफल में बीज / पौध एंव आदान कय करने हेतु प्रोजेक्ट से 700 प्रति कृषक किया जाना प्रस्तावित है।	350000	

क्र. सं.	विवरण	विवरण	प्रोजेक्ट से राशि	वि.वि.
4	तकनीकी एवं प्रसंस्करण प्रशिक्षण	100 रु. प्रति कृषक प्रशिक्षण व्यय किया जाना प्रस्तावित है।	50000	
5	साहित्य	आय की नवीन तकनीकी एवं विभागीय योजनाओं की जानकारी देने हेतु साहित्य उपलब्ध कराना इस हेतु प्रति कृषक रु. 110/- किया जाना प्रस्तावित है।	55000	
6	तारबंदी	फल बगीचे की जंगली जानवरों / पशुओं से सुरक्षा हेतु तारबंदी करना अनिवार्य है जिसमें 0.20 है. क्षेत्र में 180 मीटर पेराफेरी लम्बाई की तारबंदी लागत 16000 जिसमें से प्रोजेक्ट से अनुदान 9600 शेष राशि कृषक स्वयं वहन किया जाना प्रस्तावित है।	4800000	
7	प्रशासनिक एवं पर्यवेक्षण व्यय	प्रशासनिक एवं पर्यवेक्षण व्यय किया जाना प्रस्तावित है।	177500	
योग			10000000	

नोट – एक कृषक को अधिकतम एक हैक्टर तक लाभ दिया जाना प्रस्तावित है।।

एक जिला—एक उत्पादः— मार्बल

01.प्रस्तावना

बांसवाड़ा, राजस्थान का एक प्रमुख जिला है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और खनिज संपदा के लिए जाना जाता है। यहाँ का संगमरमर (मार्बल) विशेष रूप से प्रसिद्ध है और यह खनन क्षेत्र के रूप में उभर रहा है।

यहाँ के संगमरमर की गुणवत्ता उच्च होती है और यह विभिन्न रंगों और डिजाइनों में पाया जाता है।

बांसवाड़ा में संगमरमर उद्योग का इतिहास



- प्रारंभिक दौर — बांसवाड़ा में संगमरमर की खोज कई दशक पहले हुई थी, लेकिन इसका वाणिज्यिक खनन बीसवीं सदी के अंत में तेजी से बढ़ा।
- खनन की शुरुआत — 1980–90 के दशक में आधुनिक मशीनों के साथ मार्बल खनन शुरू हुआ, जिससे उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार हुआ।
- विकास और विस्तार — 2000 के बाद से बांसवाड़ा में कई खदानें विकसित हुईं, जिससे यह क्षेत्र राजस्थान के अन्य मार्बल हब (उदयपुर, राजसमंद, किशनगढ़) के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगा।

बांसवाड़ा मार्बल की विशेषताएँ

- यहाँ मिलने वाला मार्बल सफेद, ग्रे और हल्के हरे रंगों का होता है।
- इसकी उच्च गुणवत्ता और चमक के कारण यह भवन निर्माण और मूर्तिकला कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है।
- बांसवाड़ा मार्बल की तुलना इटालियन मार्बल से की जाती है, जिससे इसकी मांग देश-विदेश में बनी रहती है।
- बांसवाड़ा व्हाइट मार्बल — यहाँ का सबसे प्रसिद्ध संगमरमर Banswara White Marble है, जो सफेद रंग का होता है और इसमें हल्की बैंगनी या ग्रे धारियाँ होती हैं।
- उच्च गुणवत्ता और निर्यात — यहाँ का संगमरमर केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी निर्यात किया जाता है।

वर्तमान स्थिति

आज बांसवाड़ा में कई खदानें और मार्बल प्रोसेसिंग यूनिट्स हैं, जो रोजगार के बड़े अवसर प्रदान कर रही हैं। यहाँ से मार्बल का निर्यात देश के विभिन्न हिस्सों के साथ अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी किया जाता है।

औद्योगिक क्षेत्र – बांसवाड़ा और उसके आसपास कई संगमरमर की खदानें और प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) इकाइयाँ स्थित हैं।

प्रमुख संगमरमर खदानें और फैकिट्रियाँ:-

- बांसवाड़ा, कुशलगढ़, आनंदपुरी, घाटोल और बागीदौरा क्षेत्रों में कई संगमरमर की खदानें हैं।
- यहाँ पर मार्बल स्लैब, टाइल्स, ब्लॉक्स का निर्माण और आपूर्ति की जाती है।



उपयोग:-

- संगमरमर का उपयोग फर्श, किचन काउंटरटॉप्स, मंदिर निर्माण और सजावटी वस्तुओं में किया जाता है।

जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र बांसवाड़ा

“मार्बल के उत्पाद” बांसवाड़ा जिले का “एक जिला एक उत्पाद” में चयनित है।

कार्य योजना

राजस्थान सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से “एक जिला एक उत्पाद पॉलीसी—2024” जारी की गयी है। पंच गौरव के तहत एक जिला एक उत्पाद (मार्बल के उत्पाद) को बढ़ावा देने हेतु निम्न प्रकार से कार्य योजना प्रस्तावित है—

1. जिले के ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादों का डेटाबेस तैयार किया जाना, जिसमें उपक्रम का समस्त विवरण, वार्षिक क्षमता, रोजगार, निर्यात का विवरण आदि जानकारी शामिल हो।
 2. ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादकों एवं शिल्पियों को प्रतिनिधित्व की दृष्टि से एक एसोसिएशन / संघ / संस्थान का गठन कराते हुये उनके पदाधिकारी से संबंधित सूचना संकलित किया जाना।
 3. जिले के ओडीओपी उत्पादों के प्रचार—प्रसार हेतु आवश्यकतानुसार बुकलेट / ब्रोशर आदि तैयार करना।
 4. राजस्थान सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से “एक जिला एक उत्पाद पॉलीसी—2024” में निम्न प्रावधानों के तहत पंच गौरव संवर्द्धन हेतु निम्न कार्य किया जायेगा।
- नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रुपये एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख रुपये तक मार्जिन मनी अनुदान सहायता।
 - सूक्ष्म व लघु उद्यमों को एडवांस टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या 5 लाख रुपये का अनुदान।
 - क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर 75 प्रतिशत या 3 लाख रुपये तक पुनर्भरण। विपणन आयोजन में भाग लेने के लिए 2 लाख तक सहायता।
 - ई—कॉमर्स प्लेटफॉर्म फीस पर 75 प्रतिशत या 1 लाख रुपये प्रतिवर्ष का 2 साल तक पुनर्भरण।

- कैटलॉगिंग व ई-कॉमर्स वेबसाइट विकास के लिए 60 प्रतिशत या 75 हजार रुपये तक एकमुश्त सहायता ।

बांसवाडा जिले में एक जिला एक उत्पाद का कच्चा माल तलवाडा व पालोदा की मार्बल खदानों से प्राप्त होता है तथा इनसें तैयार मार्बल स्लेब, पाउडर व हेन्डीक्राप्ट आईटम का विक्रय मुख्यतः गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, कर्नाटका, आन्ध्रप्रदेश तथा पंजाब में किया जाता है।

बांसवाडा जिले के एक जिला एक उत्पाद के व्यापारियों द्वारा समय—समय पर यह मांग उठाई जाती है कि चौबिसों का पाडला क्षेत्र में मार्बल सें संबंधित अधिक ईकाइयों हैं लेकिन वहां पर विधुत की आपूर्ति निर्बाध नहीं होने के कारण ईकाइयों का संचालन सूचारू रूप से नहीं हो पाता है अतः इस क्षेत्र में उद्योगों के लिये अलग से जी.एस.एस. का निर्माण किया जायें तथा साथ ही इस क्षेत्र को जोडने वाली मुख्य सड़क तलवाडा से छींछ तक कों चौडा किया जायें जिससे भारी वाहनों का संचालन सूचारू रूप से हो सकें।

अतः बांसवाडा जिले के पंच गौरव उत्पाद (मार्बल स्लेब) के तहत चौबिसों का पाडला क्षेत्र को जोडने वाली मुख्य सड़क तलवाडा से छींछ तक कों चौडा किया जाना प्रस्तावित किया जाता है जिससे भारी वाहनों का संचालन सूचारू रूप से हो सकें।

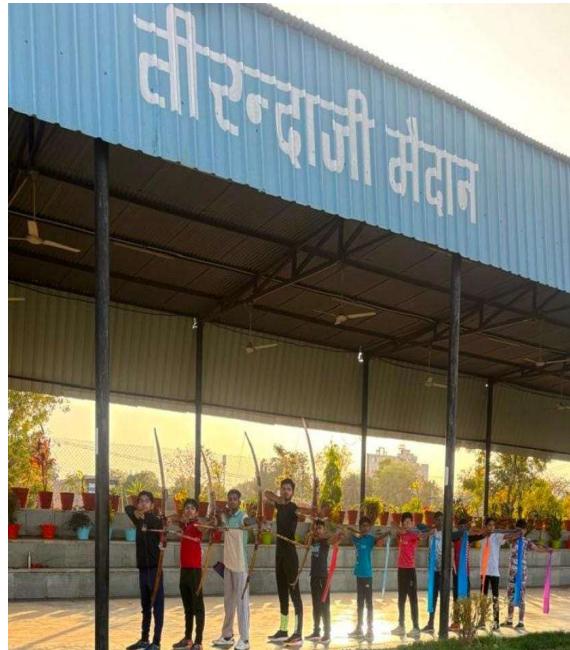
एक जिला—एक खेलः— तिरंदाजी

01. प्रस्तावना:-

यह एक खेल और कौशल है जिसमें धनुष (Bow) की सहायता से तीर (Arrow) को लक्ष्य (Target) पर मारा जाता है। इसमें सही निशाना लगाने के लिए ध्यान, संतुलन और तकनीक की आवश्यकता होती है।

02. तीरंदाजी के प्रकारः

- टार्गेट तीरंदाजी – निश्चित दूरी से स्थिर लक्ष्य पर तीर चलाना (ओलंपिक में शामिल)।
- फील्ड तीरंदाजी – प्राकृतिक वातावरण में अलग-अलग दूरी के लक्ष्यों पर निशाना लगाना।
- 3D तीरंदाजी – जानवरों के आकार के त्रि-आयामी (3D) लक्ष्यों पर निशाना साधना।
- क्लाउट तीरंदाजी – लंबी दूरी पर जमीन पर रखे लक्ष्य पर तीर चलाना।
- बोहंटिंग – शिकार के लिए उपयोग की जाने वाली तीरंदाजी।



03. बांसवाड़ा में तीरंदाजी (आर्चरी) के विकास और प्रोत्साहन के उपाय

बांसवाड़ा में तीरंदाजी को बढ़ावा देने और इसके विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। यह खेल न केवल शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक है, बल्कि बच्चों और युवाओं के लिए करियर का भी अच्छा विकल्प हो सकता है। नीचे कुछ प्रमुख उपाय दिए गए हैं, जो इस खेल को आगे बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

1. कोचिंग और प्रशिक्षण केंद्रों का विकास

- आर्चरी अकादमी या प्रशिक्षण केंद्र: बांसवाड़ा में एक आर्चरी अकादमी या कोचिंग सेंटर शुरू किया जा सकता है, जहाँ बच्चों और युवाओं को पेशेवर प्रशिक्षण दिया जा सके।

- अनुभवी कोच की व्यवस्था: अनुभवी और प्रशिक्षित कोच को नियुक्त कर तीरंदाजी का सही प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
- स्कूल और कॉलेज में तीरंदाजी प्रशिक्षण: स्कूलों और कॉलेजों में इस खेल को एक नियमित खेल गतिविधि के रूप में शामिल करना आवश्यक है।

2. आवश्यक संसाधन और सुविधाओं का विकास



- आर्चरी रेंज का निर्माण: एक उचित आर्चरी ग्राउंड या स्टेडियम तैयार किया जाए, जहाँ खिलाड़ी नियमित रूप से अभ्यास कर सकें।
- खेल उपकरण की उपलब्धता: अच्छे गुणवत्ता वाले तीर-धनुष और सुरक्षा उपकरण आसानी से उपलब्ध कराए जाएं।

3. सरकारी योजनाओं और सहयोग का उपयोग

- राजस्थान खेल विभाग और खेलो इंडिया योजना का सहयोग: राज्य सरकार और खेलो इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से फंडिंग और संसाधन प्राप्त किए जा सकते हैं।
- स्थानीय प्रशासन और एनजीओ से सहयोग: खेल को बढ़ावा देने वाले एनजीओ और स्थानीय प्रशासन की मदद ली जा सकती है।

4. प्रतियोगिताओं और आयोजनों का आयोजन

- जिला और राज्य स्तर की प्रतियोगिताएँ: हर साल जिला और राज्य स्तर पर तीरंदाजी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए।
- समर कैंप और कार्यशालाएँ: छोटे बच्चों और युवाओं के लिए समर कैंप और वर्कशॉप आयोजित की जाएं, ताकि वे इस खेल को सीख सकें।

5. जागरूकता और प्रेरणा

- सोशल मीडिया और प्रचार अभियान: तीरंदाजी को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया पर जागरूकता अभियान चलाए जाएं।
- सफल तीरंदाजों का सम्मान: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया जाए, ताकि नए खिलाड़ी प्रेरित हो सकें।

अगर ये सभी कदम उठाए जाएँ तो बांसवाड़ा में तीरंदाजी का अच्छा विकास हो सकता है और नई प्रतिभाएँ उभर कर आ सकती हैं।

कार्यालय जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र बांसवाडा
एक खेलः— तीरदांजी

क्र.स.	बिन्दू	कार्य योजना	अनुम तानि तव्य	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
1	जिला मुख्यालय / ब्लॉक के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेन्टर आदि का उन्नयन	बांसवाडा जिला मुख्यालय / ब्लॉकों के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेन्टर, खेल उपकरण आदि के विकास हेतु भविष्य की योजनाओं पर कार्य किया जाना हैं जिससे खिलाड़ियों के कौशल व दक्षता को बढ़ावा मिल सके तथा खिलाड़ियों को विकसीत किया जा सके।	10 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी
2	खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्कूलों व कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित करना	पंचगौरव कार्यक्रम के तहत विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में खेलों के महत्व स्थापित किया जाना हैं. स्कूलों व कॉलेजों के विभिन्न खिलाड़ियों को संबंधित तीरंदाजी खेल की जानकारी उपलब्ध करवा कर अधिकाधिक खिलाड़ियों को लाभान्वित किया जाना	5 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी
3	जिले में चयनित तीरंदाजी खेल के अनुसार खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक	पंचगौरव कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत एक जिला एक खेल के अनुसार जिला मुख्यालय एवं विभिन्न ब्लॉकों में खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए तीरंदाजी खेल के	30 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी

क्र.स.	बिन्दू	कार्य योजना	अनुम तानि तव्य	समय सीमा	कार्यकारी एजेन्सी
	उपकरण प्रदान करना	आवश्यक उपकरण उपलब्ध करवाए जाने हैं।			
4	खिलाड़ियों को आवास व पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवासीय सुविधाए प्रदान करना	पंचगौरव कार्यक्रम योजना के तहत खिलाड़ियों हेतु 15 बेड आवासीय खेल छात्रावास का निर्माण करवाया जाना साथ ही खिलाड़ियों को पोषण संबंधी आहार उपलब्ध करवाना।	45 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी
5	खेलो से संबंधित आवश्यक जानकारी (सुविधाओं, आयोजनो, खिलाड़ियों को सहायता आदि) ऑन लाईन व सोशल मिडिया प्लेट फार्मों पर उपलब्ध करवाना	पंच गौरव कार्यक्रम योजना के तहत खिलाड़ियों की सहायता हेतु तीरंदाजी खेल से संबंधित आवश्यक जानकारी ऑन लाईन व सोशल मिडिया पर उपलब्ध करवाई जावेगी ताकी खिलाड़ियों को तीरंदाजी खेल से संबंधित प्रतियोगिताए, प्रशिक्षण, शिविर, आदि संबंधित जानकारी प्राप्त हो जिससे खेल को बढ़ावा दिया जा सके।	5 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी
6	जिला मुख्यालय पर स्थित तीरंदाजी मैदान की दिवार एवं मैदान में आवश्यक कार्य करवाए जाने	पंच गौरव कार्यक्रम योजना में जिला मुख्यालय पर स्थित तीरंदाजी मैदान की दिवार को ऊँची उठानी तथा मैदान में मिट्टी का भराव किया जाना	5 लाख	बजट प्राप्ती उपरान्त छ माह	सरकार द्वारा मनोनित एजेन्सी

एक जिला—एक पर्यटनः— त्रिपुरा सुन्दरी

01.प्रस्तावना :-

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, जो राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में स्थित है, एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यह मंदिर माँ त्रिपुरा सुंदरी को समर्पित है, जो देवी दुर्गा का एक स्वरूप मानी जाती है। यह मंदिर बांसवाड़ा शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर तलवाड़ा गांव के पास स्थित है।

02.मंदिर का महत्वः—

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर राजस्थान के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। मान्यता है कि यहाँ माता सती के शरीर का अंग गिरा था, जिसके कारण यह स्थान शक्ति पीठ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यहाँ देवी की काले पत्थर से बनी एक सुंदर मूर्ति स्थापित है, जिसे 'तारानेतर माँ' भी कहा जाता है।



03.इतिहासः—

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर का निर्माण सैकड़ों वर्ष पहले किया गया था और यह मंदिर मेवाड़ वंश के राजाओं की आस्था का प्रमुख केंद्र रहा है। मान्यता है कि यह मंदिर 11वीं–12वीं शताब्दी में बना था और यहाँ स्थापित काली माता की प्रतिमा प्राकृतिक रूप से प्रकट हुई थी। यह मंदिर बंगाल और त्रिपुरा के त्रिपुरेश्वरी मंदिर से मिलता-जुलता है, इसलिए इसे "राजस्थान का त्रिपुरा सुंदरी मंदिर" कहा जाता है।

मंदिर की मूर्ति काले पत्थर से बनी हुई है, जिसमें देवी त्रिपुरा सुंदरी को अष्टभुजा रूप में दर्शाया गया है। मान्यता है कि यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

04. विकासः—

समय के साथ इस मंदिर का कई बार जीर्णोद्धार किया गया है। राजस्थान सरकार और स्थानीय प्रशासन ने मंदिर परिसर को विकसित करने के लिए कई प्रयास किए हैं। यहाँ पर हर साल नवरात्रि में भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं।

मंदिर तक पहुंचने के लिए सड़क मार्ग को बेहतर बनाया गया है और यात्री सुविधाओं जैसे विश्राम स्थल, पेयजल व्यवस्था, और प्रकाश व्यवस्था को आधुनिक रूप दिया गया है। बांसवाड़ा को “राजस्थान का चेरापूंजी” कहा जाता है, क्योंकि यह हरा—भरा और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर क्षेत्र है, जिससे यह धार्मिक पर्यटन के साथ—साथ प्रकृति प्रेमियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है।

05. आर्किटेक्चर और विशेषताएँः—

- मंदिर की संरचना प्राचीन राजस्थानी शैली में बनी हुई है।
- मंदिर में भक्तों के लिए पूजा—अर्चना और दर्शन की विशेष व्यवस्था होती है।
- नवरात्रि और अन्य प्रमुख हिंदू त्योहारों पर यहाँ विशेष आयोजन होते हैं।
- यह स्थान प्रकृति की सुंदरता से भरपूर है, जो श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

06. कैसे पहुँचें?—



- सड़क मार्ग: बांसवाड़ा से त्रिपुरा सुंदरी मंदिर तक सड़क मार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।
- रेल मार्ग: निकटतम रेलवे स्टेशन रतलाम या उदयपुर हो सकता है।
- हवाई मार्ग: सबसे नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर है, जहाँ से सड़क मार्ग द्वारा मंदिर तक पहुँचा जा सकता है।

07. महत्वपूर्ण तथ्यः—

- यहाँ आने वाले भक्त माता से सुख—समृद्धि और शांति की कामना करते हैं।
- मंदिर के आसपास का क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता और शांति से भरपूर है, जो इसे आध्यात्मिक और पर्यटन दोनों दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाता है।
- अगर आप धार्मिक आस्था रखते हैं और शक्तिपीठों की यात्रा करना पसंद करते हैं, तो त्रिपुरा सुंदरी मंदिर आपकी यात्रा सूची में अवश्य होना चाहिए।

08. त्रिपुरा सुंदरी पर्यटन स्थल की व्यवस्थाएँ और सुधार के सुझावः—

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, बांसवाड़ा का एक प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थल है। इसे अधिक सुविधाजनक और आकर्षक बनाने के लिए वर्तमान व्यवस्थाओं की समीक्षा और आवश्यक सुधार महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान व्यवस्थाएँ:

- सड़क और परिवहन सुविधा:—मंदिर तक जाने के लिए सड़कें ठीक स्थिति में हैं, लेकिन नियमित मरम्मत और चौड़ीकरण की आवश्यकता है।
- सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता सीमित है, जिससे निजी वाहन या टैक्सी ही एकमात्र विकल्प बन जाते हैं।

श्रद्धालुओं के लिए बुनियादी सुविधाएँ:

- मंदिर परिसर में पीने के पानी और शौचालय की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन इन्हें और स्वच्छ और आधुनिक बनाया जा सकता है।
- विश्रामगृह और धर्मशालाएँ हैं, लेकिन अधिक पर्यटकों के लिए अतिरिक्त रुकने की व्यवस्था होनी चाहिए।



सुरक्षा और आपातकालीन सेवाएँ:

- मंदिर परिसर में सुरक्षा गार्ड तैनात होते हैं, लेकिन सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।
- आपातकालीन चिकित्सा सेवाएँ सीमित हैं, जिससे पास के अस्पतालों से मेडिकल सहायता का इंतजाम किया जाना चाहिए।

भोजन और प्रसाद व्यवस्था:

- मंदिर के आसपास छोटे होटल और प्रसाद की दुकानें हैं, लेकिन सफाई और गुणवत्ता को बेहतर करने की जरूरत है।
- पर्यटकों के लिए उचित दरों पर शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

सुधार और सुझावः

इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधार

- मंदिर तक पहुंचने वाली सड़कों का चौड़ीकरण और मरम्मत होनी चाहिए।
- पार्किंग सुविधा को और बेहतर बनाकर बड़े वाहनों के लिए पर्याप्त स्थान दिया जाए।

सुरक्षा और स्वच्छताः

- मंदिर परिसर में स्वच्छता अभियान चलाकर सफाई को प्राथमिकता दी जाए।
- महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम किए जाएं।

पर्यटन को बढ़ावा देने के उपायः

- मंदिर के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को दर्शाने के लिए डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड लगाए जाएं।
- श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम और आध्यात्मिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए।

ऑनलाइन बुकिंग और डिजिटल सेवाएँः

- श्रद्धालुओं के लिए ऑनलाइन दर्शन और दान की सुविधा शुरू की जाए।
- मंदिर की वेबसाइट और मोबाइल ऐप बनाकर लाइव दर्शन और मार्गदर्शन की सेवा उपलब्ध कराई जाए।

स्थानीय रोजगार और व्यापार को बढ़ावा:

- स्थानीय हस्तशिल्प और पारंपरिक वस्त्रों की बिक्री के लिए उचित बाजार व्यवस्था की जाए।
- गाइड सेवाओं को बढ़ावा देकर स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएं।

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर को एक सुव्यवस्थित और आधुनिक पर्यटन स्थल बनाने के लिए सुविधाओं का विकास आवश्यक है। यदि इन सुधारों को लागू किया जाए, तो यह स्थल धार्मिक आस्था के साथ-साथ पर्यटकों के लिए भी एक बेहतरीन अनुभव बन सकता है। सरकार और स्थानीय प्रशासन को मिलकर इन प्रयासों को तेजी से अमल में लाना चाहिए।

निम्नलिखित कार्यों के राशि ₹.100.00 लाख तक सांस्कृतिक कार्यक्रम/भजन कीर्तन के आयोजन हेतु मंदिर प्रांगण में रंगमंच का निर्माण करवा जा सके।

राजस्थान सरकार

कार्यालय जिला कलक्टर, बांसवाड़ा

Ph. No.02962-242530

E-mail:- dsobns.des@rajasthan.gov.in

क्रमांक :-एफ ५()/१३/पंच गौरव/समन्वय/डीईएस-बांस/२०२५/५७

दिनांक :- ०५/०२/२०२५

कार्यालय आदेश

विशिष्ट शासन सचिव महोदया आयोजना विभाग जयपुर के आदेश क्रमांक एफ ५.३(१७) / डीईएस / २०२४-०५४२५-६६३५८९४ / ९० दिनांक २३.०१.२०२५ के द्वारा राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने तथा सभी जिलों का सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए "पंच गौरव" के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित कर "पंच-गौरव" कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

अतः प्राप्त दिशा निर्देशानुसार कार्यक्रम का क्रियान्वयन किये जाने हेतु जिला स्तरीय समन्वय समिति का गठन निम्नानुसार किया जाता है—

क्र.स	अधिकारी	पद
1	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2	जिला स्तरीय अधिकारी— ➤ वन विभाग — उप वन संरक्षक अधिकारी। ➤ उद्योग विभाग — महाप्रबन्धक। ➤ उद्यानिकी विभाग — उप निदेशक। ➤ पर्यटन विभाग— जिला पर्यटन अधिकारी। ➤ खेल विभाग — जिला खेल अधिकारी।	सदस्य
3	जिला कोषाधिकारी बांसवाड़ा	सदस्य
4	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, बांसवाड़ा	सदस्य सचिव

जिले द्वारा पंच-गौरव कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार एवं आमजन को कार्यक्रम के बारे में जानकारी दिये जाने हेतु पंच गौरव कार्यक्रम से संबंधित एक लघु फिल्म तैयार की जानी है।

सलग्न :—दिशानिर्देश

—४०—

(डॉ. इन्द्रजीत यादव)

जिला कलक्टर

बांसवाड़ा

प्रतिलिपि निम्नांकित को सूचनार्थ एवं पालनार्थ :—

०१. निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर।

राजस्थान सरकार
कार्यालय उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी, बांसवाडा(राज0)

Ph. No.02962-242530

E-mail:- dsobns.des@rajasthan.gov.in

क्रमांक :-एफ ५()/१३/पंच गौरव/समन्वय/डीईस-बांस/२०२५/८८

दिनांक :- २१/०२/२०२५

—:: बैठक सूचना ::—

“पंच गौरव” कार्यक्रम के अन्तर्गत जिलास्तरीय समीक्षा बैठक माननीय जिला कलक्टर महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 24.02.2025 सोमवार को सायं 3:30 बजे कलक्टर सभागार में रखी गई है। जिसमें “पंच गौरव” कार्यक्रम से संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी अनिवार्य रूप से बैठक में चिह्नित “पंच गौरव” से संबंधित १-२ प्रमुख कार्यों/परियोजना के प्रस्ताव मय विवरण की सूचना के साथ भाग लेना सुनिश्चित करें।

➤ बैठक दिनांक —24.02.2025, सोमवार

➤ समय :- ०३:३० बजे

—८०—

(सत्येन्द्र कुमार शाह)

उप निदेशक

आर्थिक एवं सांख्यिकी बांसवाडा

प्रतिलिपि निम्नांकित को सूचनार्थ एवं पालनार्थ :-

1. जिला कोषाधिकारी बांसवाडा।
2. उप वन संरक्षक अधिकारी वन विभाग बांसवाडा।
3. महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, बांसवाडा।
4. उप निदेशक उद्यानिकी विभाग बांसवाडा।
5. जिला खेल अधिकारी खेल विभाग बांसवाडा।
6. जिला पर्यटन अधिकारी बांसवाडा।
7. रक्षित पत्रावली

Signature valid

Digitally signed by Satyendra Kumar
 Shah
 Designation : Deputy Director
 Date: 2025.02.21 14:27:10 IST
 Reason: Approved



<u>कार्यालय उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग बांसवाड़ा</u>				
उपस्थिति पंच गौरव बैठक				
दिनांक:- 24.02.2025				
क्र.सं.	अधिकारी का नाम	पद	मोबाइल नम्बर	हस्ताक्षर
1	डॉ. इन्द्रजीत चाहू	DM		
2				
3	सत्येन्द्र कुमार शाह	DD		<u>शाह</u>
4	Abhinav Malow	ACF(Forest)	7898538358	<u>Malow</u>
5	Dal Singh, Garasiyā	DDH	9460332618	<u>Garasiyā</u>
6	तमाण चूमारजोरी (DICC)	UDC	9413754440	<u>चूमारजोरी</u>
7	धनेश्वर महेड़ा	BSO/Spots	9414171876	<u>महेड़ा</u>
8	राधुल वर्मा	BSO, Bansdroni	7014005139	<u>राधुल वर्मा</u>
9	बद्रीनीलाल लिनामा	AOH खाली	9602493778	<u>लिनामा</u>
10	खुशी चौधरीसा	XIP	9460785091	<u>खुशी</u>
11				
12				



राजस्थान सरकार
कार्यालय जिला कलक्टर, बांसवाड़ा

Ph. No. 02962-242530

E-mail:- dsobns.des@rajasthan.gov.in

क्रमांक :—एफ ५()/१३/पंच गौरव/समन्वय/डीईएस—बांस/२०२५/७९

दिनांक :—०५/०३/२०२५

विशिष्ट शासन सचिव महोदय,
आयोजना विभाग राजस्थान, जयपुर।

विषय:— पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रस्ताव के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के अन्तर्गत बासंवाड़ा जिले से चिन्हित ‘पंच गौरव’ के प्रस्ताव सम्बन्धित विभागों से प्राप्त कर श्रीमान को अग्रिम कार्यवाही हेतु पत्र के साथ संलग्न कर भिजवाये जा रहे हैं—

क्र.सं.	विभाग का नाम	प्रस्तावित कार्य का विवरण	लागत (लाखों में)
1	वन विभाग	जिले में सागवान वृक्ष के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु	75.00
2	पर्यटन विभाग	जिले में पर्यटन स्थल त्रिपुरा सुन्दरी में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु।	100.00
3	उद्योग विभाग	जिले में मार्बल उत्पादन (चौबिसो का पारडा से छींच तक सड़क को चौड़ा किया जाना प्रस्तावित किया गया) को बढ़ावा देने हेतु	50.00
4	खेल विभाग	जिले में तिरंदाजी को बढ़ावा देने हेतु।	100.00
5	उद्यान विभाग	जिले में आम की उपज एवं उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु।	155.95

संलग्न उपरोक्तानुसार —

—ह०—
(डॉ. इन्द्रजीत यादव)
जिला कलक्टर
बांसवाड़ा

प्रतिलिपि निम्नांकित को सूचनार्थ एवं पालनार्थ :—

1. निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर।
2. जिला कोषाधिकारी बांसवाड़ा।
3. उप वन संरक्षक अधिकारी वन विभाग बांसवाड़ा।
4. महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, बांसवाड़ा।
5. उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, बांसवाड़ा।
6. उप निदेशक उद्यानिकी विभाग बांसवाड़ा।
7. जिला खेल अधिकारी खेल विभाग बांसवाड़ा।
8. जिला पर्यटन अधिकारी बांसवाड़ा।
9. रक्षित पत्रावली।

Signature valid

Digitally signed by Indojeet Yadav
Designation: Collector & District
Magistrate
Date: 2025.03.05 18:18:44 IST
Reason: Approved

